शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

शोध के प्रति जागरूकता व लगाव जरूरी

सम्पादकीय

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

शोध के प्रति जागरूकता व लगाव जरूरी

शोधकार्य व शोधपत्र के प्रकाशन का महत्व शैक्षिक जगत में लगातार बढ़ता जा रहा है। यद्यपि पूर्व में इनका महत्त्व किसी भी रूप में कम नहीं था, किन्तु उसका प्रत्यक्ष तत्काल लाभ कम से कम शिक्षक को न मिलने व इस कार्य के सन्दर्भ किसी प्रकार की अनिवार्यता के न होने से उनमें उसके प्रति किसी प्रकार की सत्त् संलग्नता का सर्वथा अभाव ही रहा।

भारतीय समाज में दी जाने वाली उच्च शिक्षा में तमाम प्रकार की पारम्परिक खामियों रही हैं। इनमें अच्छे ढंग से नियमितरूप से शोध कार्य का न होना एक आधारभूत खामी रही है। विज्ञान के कुछ विषयों को छोड़ दिया जाये तो अधिकतर दूसरे विषयों में विभिन्न विश्वविद्यालयों में नियमित तौर पर शोध करने की कोई पुष्ट अनिवार्य परम्परा नहीं रही है। इसका दुष्परिणाम यह रहा कि कई विषयों के महत्व को ही सन्देह की नजर से देखे जाने लगे। यद्यपि वे कभी भी कम महत्व के विषय नहीं रहे। आखिरकार विभिन्न विषयों में समय के साथ शोध के माध्यम से नये तथ्यों के शामिल न किये जाने पर उसकी प्रासंगिकता व उपादेयता का सन्देहपूर्ण होना बिल्कुल स्वाभाविक ही है। भारत जैसे देश में राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, इतिहास, भाषा सहित कला व मानविकी के तमाम अन्य विषय क्षेत्र में शोध के महत्व व आवश्यकता से कौन इंकार कर सकता है। इसी प्रकार, प्रबन्धन, वाणिज्य आदि विषयों में शोध किये जाने की काफी गुँजाइश व आवश्यकता है। एक प्रगतिशील समाज के लिए तो इसका महत्व और भी बढ़ जाता है ।

किन्तु जब हम भारतीय सन्दर्भ में उच्च शिक्षा में इन विषयों में किये गये शोध कार्य पर दृष्टि डालते हैं तो गहरी निराशा हाथ लगती है। इन सबका परिणाम यह रहा कि उच्च शिक्षा स्तर पर पढ़ाये जाने वाले तमाम विषयों में विविध प्रकार के सिद्धान्त व उदाहरण के लिए पश्चिम के ज्ञान पर हमारी निर्भरता लगातार बनी रही। कई सन्दर्भों में हम बेहद निरर्थक व अर्थहीन बातों को उच्च शिक्षा में सिर्फ इसलिए शामिल किये रहे क्योंकि उसके विकल्प के रूप में हमारे पास स्वयं अपना ज्ञान सुव्यवस्थित व पर्याप्त रूप में नहीं रहा है। यद्यपि ज्ञान देशकाल की परिधि में सिमट करके नहीं होता है फिर इसके तमाम ऐसे पक्ष हैं जो कि हमारे अपने होने चाहिए। किंतु ऐसा न होने के कारण इसके तमाम नकारात्मक पहलू भी पैदा हुए जो कि स्वयं अपने आप में शोध के विषय हैं। धीरे धीरे उच्च शिक्षा अर्थहीन व दिशाहीन होती चली गयी। यद्यपि आज भी स्थिति कोई बहुत सन्तोषजनक नहीं है।

विश्वविद्याालय अनुदान आयोग द्वारा इधर के वर्षो में शोध कार्य व शोध पेपर के महत्व को रेखाँकित करने व कुछ सन्दर्भो में अनिवार्य किये जाने के पश्चात इस क्षेत्र में विविध प्रकार की गतिविधियाँ बढ़ने लगी हैं। तमाम शोध पत्रों के प्रकाशन भी शुरू किये गये हैं। इसके बावजूद स्थिति अभी भी काफी सन्तोषजनक नहीं है। यहाँ पर यह बात ध्यान में रखने की है कि अभी भी अधिकतर सन्दर्भों में चल रहे शोध कार्यों को शोधार्थी एक बोझ के रूप में ले करके ही कार्य कर रहे हैं। इस कारण इनमें गुणवत्ता की काफी कमी दिखाई देती है। इसी प्रकार, शोध के क्षेत्र में उचित विषय की भी सही प्रकार से पहचान नहीं हो किये जाते है। अभी भी कुछ लोग शोध कार्य व शोध पत्र लेखन को किसी प्रकार ले दे करके पूरा कर लेने का कार्य समझने के साथ साथ इसी रूप में दूसरे को भी समझाते हुए दिखते हैं।

सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि शोधा के सन्दर्भ में अपनाये जाने वाले कार्य पद्धति व डिजाइन के बारे में शोधार्थियों का ज्ञान भी अधाकचरा है। शोध कार्य करने के दौरान अधिकतर शोधार्थी उचित शोध प्रक्रिया को नहीं अपनाते हैं। ऐसा न केवल अज्ञानतावश बल्कि शोध कार्य में लगाव व मेहनत की कमी के कारण होता है। अत: उसके प्रस्तुत किये जाने में आरम्भ से ले करके अन्त तक में किसी प्रकार का आकर्षण व उपयोगिता की झलक नहीं मिलती है। उसके प्रत्येक चरण की बनावट व प्रस्तुति अपने आप में बोझिलता लिए होती है। होना यह चाहिए कि शोधकर्त्ता अपने कार्य को इस प्रकार से स्वयं करे कि उसे शोध कार्य करने का भी आनन्द महसूस हो। जब तक एक शोधकर्त्ता के मन में यह भाव नहीं होगा, तब तक वह किसी भी विषय पर शोध कार्य करने के आनन्द को भी नहीं ले सकता है।

किसी भी प्रकार के शोध विषय लेने से पहले यह आवश्यक है कि शोधकर्त्ता की स्वयं उसमें रूचि हो और उसके महत्व के बारे में भी वह समझ रखता हो। शोध कार्य एक तरु विषय के शोधापूर्ण पक्ष को मजबूत करता हो, जिससे कि छात्रों व शैक्षिक जगत में नये ज्ञान प्रदान करने में सहायता मिले। वहीं दूसरी तरफ, वह समाज के लिए भी उपयोगी साबित हो। यही इस तथ्य को भी बताना उचित होगा कि शोधा कार्य बाजार की आवश्यकता को ध्यान में किया जाये तो उसका महत्व बढ़ जाता है।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

शोध के प्रति जागरूकता व लगाव जरूरी

सम्पादकीय

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

आखिर घिसे पिटे अन्दाज में सन्दर्भ हीन बातें बता करके एक शिक्षक न केवल अपने महत्व को कम करता है वरन् शिक्षा के मूल उद्देश्यों को भी पूरा करने में असफल रहता है। परिणाम यह होता है कि कक्षा बेहद बोझिल व उबाउ हो जाती है। अत: शिक्षक में शोध के प्रति जागरूकता होना आवश्यक है। यह जागरूकता दोनों प्रकार से होनी चाहिए। अर्थात् एक तरफ वह ज्ञान की तलाश में शोध कार्य करके दूसरों को नवीन तथ्यों से अवगत कराये तथा साथ ही स्वयं में भी नये ज्ञान को सत्त् आत्मसात करने के लिए तैयार रहे।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN